3

रीतिकाव्य
(बिहारी और पद्माकर)

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल के बाद रीतिकाल आता है। रीतिकाल में भक्ति और नीति की धारा तो बनी रही, प्रकृति-चित्रण भी हुआ। साथ ही उसकी कुछ और भी विशेषताएँ थीं; जैसे-शृंगार-वर्णन की अतिशयता और भाव तथा भाषा का विलक्षण प्रस्तुतीकरण। इस काल की काव्य भाषा ब्रज है और दोहा, सवैया और कवित्त इस काल के प्रमुख छंद हैं। रीतिकाल की अनेक धाराओं से जुड़े कई प्रमुख कवि हैं। बिहारी और पद्माकर भी इन प्रमुख कवियों में शामिल हैं। इन्हें क्रमश: 'रीतिसिद्ध' और 'रीतिबद्ध' कवि भी कहा गया है। इन कवियों में रीतिकाल की अनेक प्रमुख प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है। बिहारी ने अपने अद्भुत भाषा-सामर्थ्य के कारण अपने दोहों में गहरी अर्थ-संभावनाएँ भर दी हैं। इसी गुण के कारण बिहारी के दोहों को 'गागर में सागर', कहा गया है। वसंत और होली के समय को शृंगार से जोड़ देने में पद्माकर की ख्याति है।

आइए, इस पाठ में हम बिहारी और पद्माकर के कुछ छंदों के माध्यम से रीतिकाल की उपर्युक्त प्रवृत्तियों को देखें।

उददेश्य

इस पाठ को पढ़कर आप

- भक्ति में निहित अंतरंगता के भाव का उल्लेख कर सकेंगे;
- धन के नशे को बुराई मानकर उस पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- उदाहरण देते हुए प्रकृति-चित्रण के सौंदर्य को स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता में आए फाग के दृश्य के सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे;
- बिहारी और पद्माकर के काव्य के भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

टिप्पणी

शब्दार्थ

टेरत – आवाज़ देना, पुकारना
रट – बार-बार दुहराना, विनती करना
सहाय – सहायता करने वाले, उबारने वाले
तुमहूँ – तुमको भी
जगन्नाथ – जगत के नाथ भगवान
जगवाय – जग की बाय, दुनिया की हवा
कनक – 1. सोना (धन) 2. धतूरा (एक मादक फल)
बौरात है – बौराना (मदहोश होना)
बतरस – बात सुनने (करने) का आनंद
लाल – ललन, नायक (श्रीकृष्ण)
मुरली – बाँसुरी
धरी – रख दी
लुकाय – छिपाकर
सौंह करैं – सौगंध लेती है
भौंहनु – भौंहों में
दैन कहै – देने के लिए कहना
नटि जाय – मुकर जाती है
कहलाने – गर्मी से बैचेन होकर
एकत – एक साथ
बसत – बसते हैं, रहते हैं
अहि – साँप
मयूर – मोर
मृग – हिरन
बाघ – शेर
तपोवन – तपस्या करने योग्य स्थान
सौ – सो, जैसा
कियौ – कर दिया
दीरघ – दीर्घ, लंबा, गहरा
दाघ – ताप
निदाघ – गरमी, ग्रीष्म ऋतु

(क) बिहारी

3.1 मूल पाठ

1. कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जगन्नाथ-जगवाय।।

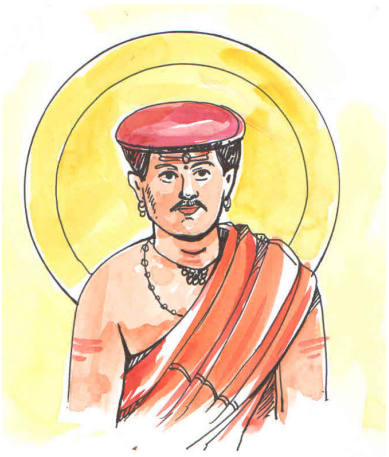

चित्र 3.1 : बिहारी

2. कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

3. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।।

4. कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।

बोध प्रश्न 3.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. बिहारी के दोहे में श्रीकृष्ण के लिए संबोधन नहीं है-

   (क) दीन (ख) स्याम

   (ग) जगत-गुरु (घ) जगन्नाथ

2. 'कनक-कनक तैं सौगुनी .....' दोहे का संबंध है-

   (क) प्रकृति-चित्रण से (ख) भक्ति से

   (ग) नीति से (घ) शृंगार से

3. कृष्ण से बातें करने का आनंद पाने के लिए गोपी क्या करती है-

   (क) मुरली को छिपा देती है (ख) कसम खाती है

   (ग) भौहों में हँसती है (घ) मुरली दे देती है

4. 'कहलाने एकत बसत.....' दोहे में किस ऋतु का प्रभाव चित्रित है-

   (क) वसंत (ख) ग्रीष्म

   (ग) वर्षा (घ) हेमंत

3.2 आइए समझें

आपने भक्तिकालीन कविता पढ़ी है। भक्त भगवान को तरह-तरह से याद करता है। कभी वह उसकी लीलाओं का गान करता है, तो कभी आर्त स्वर में पुकारता है; कभी वह उसका सहचर (मित्र) हो जाता है, तो कभी उसे पति या प्रेमी भाव से याद करता है। भक्ति का एक सोपान वह भी है, जब भक्त भगवान से लगभग बराबरी के स्तर पर बात करने लगता है, उसे उलाहना देने लगता है। यह स्तर अंतरंगता के भाव का है।

ऐसी ही अंतरंग भाव की भक्ति को कवि ने पहले दोहे में दर्शाया है। एक बार इस दोहे को फिर से पढ़िए।

दोहा-(1)

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जगन्नाथ-जगवाय।।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के सुप्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

टिप्पणी

कब को टेरत दीन रट,
होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु,
जगन्नाथ-जगवाय।।

व्याख्या : कवि कहता है कि मैं कब से तुम्हें दीन स्वर में पुकार रहा हूँ अर्थात् कितने लंबे समय से अपने दुखों का निवारण करने के लिए तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ, पर हे श्रीकृष्ण! तुम मेरी सहायता नहीं करते, मेरे दुखों को दूर नहीं करते। हे सारी दुनिया के गुरु! हे जगत के स्वामी! लगता है कि तुम्हें भी इस संसार की हवा लग गई है। जैसे इस दुनिया में सब लोग अपने आप में मस्त रहते हैं, कोई किसी के दुख में हाथ नहीं बँटाता और अपनी प्रशंसा और प्रभुता का आनंद लेता रहता है, ऐसा ही तुम भी कर रहे हो।

टिप्पणी

1. इस दोहे में 'तुमहूँ' और 'जगत-गुरु' संबोधनों तथा 'सांसारिक हवा लगने' के उलाहने से भक्ति के अंतरंग भाव की पुष्टि होती है।

2. आपने, संभवत: 'बाय आना' या 'हवा लगना' जैसे प्रयोग सुने होंगे। किसी के व्यवहार में अचानक असामान्य परिवर्तन आने पर यह कहा जाता है। 'नए ज़माने की हवा लगना' भी इसी अर्थ में प्रयोग होता है यानी जब किसी व्यक्ति के आचरण में किसी प्रकार का आकस्मिक परिवर्तन होता है, तब इस मुहावरे का प्रयोग होता है। प्रस्तुत दोहे में इस मुहावरे का सुंदर काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

3. आप जानते हैं कि जहाँ एक वर्ण की निरंतर आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इस दोहे में 'स्याम सहाय' और 'जगत-गुरु', 'जगन्नाथ-जगवाय' में क्रमश: 'स' और 'ज' वर्णों की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

क्रियाकलाप 3.1

आप जानते हैं कि नशा बुरा होता है। शराब, अफ़ीम, चरस, गाँजा आदि मादक द्रव्यों के सेवन से तो आदमी को नशा होता ही है, पर धन, शक्ति और सत्ता भी व्यक्ति को मदमस्त कर देते हैं। आपने अपने आस-पास ऐसे लोग अवश्य देखे होंगे। धन के नशे में चूर किसी व्यक्ति के आचरण पर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

दोहा-(2)

कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

आइए, अब बिहारी के अगले दोहे को समझते हैं-

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में कवि ने अचानक धन प्राप्त होने वाले व्यक्ति के नशे का वर्णन किया है। कवि का कहना है कि यह नशा मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले नशे से सौ गुना अधिक बुरा होता है।

टिप्पणी

कनक कनक तैं सौगुनी,
मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है,
या पाएँ बौराय।।

व्याख्या : इस दोहे में 'कनक' शब्द पर ध्यान दें, जिसका प्रयोग दो बार किया गया है। आप जानते हैं कि 'कनक' का अर्थ होता है- सोना। पहले 'सोना' शब्द का प्रयोग मात्र एक धातु के लिए ही नहीं किया जाता था, बल्कि वह धन-दौलत के पर्याय के रूप में भी होता था। आप जानते ही होंगे कि पुराने समय में सोने की मुद्रा का चलन था। आगे चलकर अन्य प्रकार (कागज़ आदि) की मुद्रा के चलन के बाद भी सोने का महत्व धन-संपत्ति के रूप में बना रहा। सोने के अतिरिक्त 'कनक' शब्द का एक और अर्थ है धतूरा। धतूरा एक प्रकार का फल होता है, जिसे खाने से नशा हो जाता है।

दोहे में आए एक और शब्द 'बौरात' या 'बौराय' पर ध्यान दीजिए। 'बौराना' का अर्थ होता है-मस्तिष्क की वह अवस्था जिसमें आदमी बहकी-बहकी बातें करता है यानी उसका व्यवहार सामान्य नहीं रहता। नशे की तरंग में उसकी सहजता नष्ट हो जाती है और सोचने-विचारने की शक्ति समाप्त हो जाती है। इसी को मदहोश या मदमस्त होना भी कहते हैं। सामान्य व्यवहार में 'बौराना' शब्द का प्रयोग 'पगलाना' या 'पागल होना' के अर्थ में भी किया जाता है।

प्रस्तुत दोहे में कवि का मानना है कि सोने में धतूरे से सौगुना अधिक नशा होता है, क्योंकि धतूरे के तो खाने से आदमी मदहोश होता है जबकि सोना मिल जाने पर उसकी स्थिति इससे भी बुरी हो जाती है। धन की मादकता इसलिए अधिक है कि उसका प्राप्त होना ही सिर चढ़कर बोलने लगता है, जबकि मादक द्रव्य तो सेवन करने पर ही (और वह भी थोड़े समय के लिए) आदमी का सिर घुमाते हैं। अतः धन का नशा अन्य किसी भी प्रकार के नशे से अधिक मादक और ख़तरनाक होता है। मादक पदार्थों का नशा उन्हें सेवन करने के कुछ समय बाद उतर जाता है, किंतु सोने (धन) का नशा बना ही रहता है और जीवन की अन्य गतिविधियों पर उसका चढ़ा हुआ रंग तरह-तरह से दिखाई देता है।

टिप्पणी

1. प्रस्तुत दोहे में मनुष्य के व्यवहार पर धन के कुप्रभाव को बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया गया है। साथ ही, यह नीतिगत संकेत भी है कि धन-दौलत, सुख-संपत्ति पाने पर मनुष्य को अपने व्यवहार को नियंत्रित रखने की अधिक आवश्यकता होती है।
2. कवि ने 'कनक' शब्द का प्रयोग दोनों बार भिन्न अर्थों ('सोना' और 'धतूरा') में किया है। आप समझ ही गए होंगे कि यहाँ 'यमक' अलंकार का सौंदर्य है।

पाठगत प्रश्न 3.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'कब को टेरत दीन रट' दोहे में उलाहना देने के कारण कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है-

(क) दैन्य (ख) अंतरंगता

(ग) दास्य (घ) साहचर्य

2. 'जगत-गुरु, जगन्नाथ-जगवाय' में कौन-सा अलंकार है-

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) यमक

3. 'कनक-कनक तैं.....' में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

4. 'कनक-कनक तैं सौगुनी.....' दोहे में किसका प्रभाव सौ गुना अधिक कहा गया है-

(क) धन का (ख) धतूरे का

(ग) नशे का (घ) पागलपन का

दोहा-(3)

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।।

प्रसंग : यहाँ कृष्ण और राधा के प्रेम का सुंदर निरूपण है।

बतरस लालच लाल की,
मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै,
दैन कहै, नटि जाय।।

व्याख्या : गोपियों को कृष्ण से बात करना अच्छा लगता है, कोई एक उनकी बाँसुरी को छिपा देती है, कृष्ण उसे कसम देते हैं तो वह भौंहों में मुस्कुराती है, वापस देने की बात कहकर फिर मुकर जाती है। स्पष्ट है कि कोई गोपी अपने आप को कृष्ण से बात करने के लोभ को रोक नहीं पाती। कृष्ण उससे बातें करें, इसके लिए उनकी बांसुरी कहीं छिपा देती है। कृष्ण द्वारा बाँसुरी माँगने पर भौंहों में हँसती है। वह बाँसुरी वापस नहीं करती, क्योंकि जितनी देर बाँसुरी उसके पास रहेगी, उतनी ही देर उससे बातें करने के लिए विवश होंगे।

आप बिहारी के दो दोहों की व्याख्या पढ़ चुके हैं। यह दोहा सरल भाषा में सरल भाव वाला है। संकेत आपको मिल ही गए, तो फिर क्या देर... उठाइए कागज़-कलम और लिख डालिए इसकी सुंदर-सी भावपूर्ण व्याख्या।

दोहा-(4)

कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।

अब ज़रा बिहारी के प्रकृति-चित्रण वाले दोहे को शब्दार्थ सहित पढ़िए। ज़रा गौर कीजिए 'कहलाने' शब्द पर। 'कहलाने' शब्द का अर्थ 'कहलाने भर के लिए' नहीं है। यहाँ 'कहलाने' का अर्थ है-व्याकुल होकर। 'कहलाना' क्रिया-शब्द का ब्रजभाषा में इसी अर्थ में प्रयोग होता है।

टिप्पणी

कहलाने एकत बसत
अहि, मयूर, मृग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ,
दीरघ-दाघ, निदाघ।।

तपोवन की विशेषता क्या होती है, जानते हैं न! पढ़ा ही होगा ऋषियों-मुनियों के संदर्भ में इस शब्द को। जी हाँ, वही होता था तपोवन, जहाँ ये लोग तपस्या करते थे और जहाँ किसी भी किस्म की हिंसा वर्जित होती थी। कभी-कभी दुख, पीड़ा या संकट एक-दूसरे के विरोधियों को भी एक कर देते हैं। अर्थात् जगत में तपोवन की-सी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। इस दोहे में ऐसी ही स्थिति का बयान है।

चित्र 3.2 : मृग, बाघ आदि

आपने पढ़ ही लिया होगा कि 'दाघ' का अर्थ होता है 'ताप' और निदाघ का 'गरमी'। अब 'दीरघ' यानी 'दीर्घ' पर विचार कीजिए। 'दीर्घ' का अर्थ है - लंबा, विस्तृत, गहरा, भारी .....। अब आप इन शब्दों में से उपयुक्त शब्द का चुनाव कीजिए या मिलते-जुलते अर्थ वाले किसी और ऐसे शब्द को चुनिए जो ताप के विशेषण के तौर पर प्रयोग किया जा सके।

अगर आप मूलपाठ से शब्दार्थ जान चुके हैं और इन संकेतों को भी पढ़ चुके हैं, तो इस दोहे की व्याख्या करने में कोई मुश्किल नहीं आएगी। उठाइए कागज़-कलम और शुरू हो जाइए। पहले प्रसंग लिखिए और फिर उसकी व्याख्या लिख दीजिए।

पाठगत प्रश्न 3.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. गोपी कृष्ण से बाँसुरी देने की बात कहकर मुकर जाती है, क्योंकि-
   (क) वह चाहती है कि कृष्ण उससे बातें करें
   (ख) वह नहीं चाहती कि कृष्ण उससे बातें करें
   (ग) उसे बाँसुरी मिलती नहीं
   (घ) उसे बाँसुरी की ज़रूरत है
2. कवि ने ग्रीष्म में जगत को तपोवन-सा कहा है, क्योंकि इसमें-
   (क) एक-दूसरे के शत्रु भी साथ-साथ रहते हैं
   (ख) चारों ओर सन्नाटा हो जाता है
   (ग) सभी लोग व्याकुल होने लगते हैं
   (घ) तप के लिए जगत उपयुक्त हो जाता है

3. 'दीरघ-दाघ निदाघ' में अलंकार है-

(क) श्लेष (ख) उपमा

(ग) यमक (घ) अनुप्रास

3.3 भाव और शिल्प-सौंदर्य

आपने बिहारी के कुछ दोहों को पढ़ा और समझा। आपने अनुभव किया होगा कि कविवर बिहारी ने नितांत अनौपचारिक ढंग से लगभग मित्र-भाव से कृष्ण का स्मरण किया है। रीतिसिद्ध बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। रीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्ति श्रृंगार-वर्णन है।श्रृंगार के संयोग पक्ष की प्रस्तुति मन को छू लेने वाली है। इसके लिए बिहारी ने नायक-नायिका की अनेक दैनिक गतिविधियों को आधार बनाया है। भक्ति और श्रृंगार के अतिरिक्त बिहारी ने नीति-काव्य भी लिखा है, पर प्रकृति-चित्रण के जितने सुंदर दोहे उन्होंने लिखे हैं, अन्यत्र दुर्लभ हैं। यद्यपि रीतिकाल में प्रकृति के बहुत सुंदर चित्र मिलते हैं, पर वे प्राय: कवित्त, सवैया जैसे छंदों में हैं। वहाँ वर्णन के लिए दोहे की तुलना में अधिक शब्द और पंक्तियाँ होती हैं। बिहारी ने प्रकृति के कोमल, रुचिकर रूपों के साथ-साथ प्रचंड रूप का भी वर्णन किया है। कवि बिहारी जीवन के विविध अनुभवों से संपन्न थे और आयुर्वेद, ज्योतिष, राजनीति आदि अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। इसीलिए उन्हें बहुज्ञ कवि कहा जाता है। उनके अनेक दोहों में इस ज्ञान की छाप मिलती है।

बिहारी ने काव्य-रचना दोहा छंद में की है। उनकी भाषा ब्रज है। प्राय: सारा रीतिकालीन काव्य ब्रजभाषा में ही रचा गया है। अपने माधुर्य के कारण ब्रजभाषा श्रृंगार और प्रकृति-चित्रण के लिए उपयुक्त भी है। बिहारी के भाषा-प्रयोग में बहुत व्यापकता है। संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से लेकर आम बोलचाल के शब्दों तक का प्रयोग उन्होंने किया है। लोक में प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सटीक प्रयोग उनकी काव्य-भाषा की विशेषता है। सबसे अधिक सराहनीय है, उनकी भाषा की लाक्षणिकता यानी सामान्य से लगने वाले वर्णन में निहित अर्थ-चारुत्व और अनेक अर्थों की संभावना।

यह तो आप पढ़ ही चुके हैं कि कवि बिहारी ने अनुप्रास, यमक और श्लेष अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उत्प्रेक्षा, रूपक, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति, संदेह, भ्रांतिमान, वीप्सा, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रभावी उपयोग किया है। अत: भाषा की आलंकारिकता उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं में शामिल है।

(ख) पद्माकर

3.4 मूल पाठ

आपने बिहारी के दोहों को पढ़ और समझ लिया है। आइए, पद्माकर के एक कवित्त को पढ़ें और उसके बाद समझें-

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।

चित्र 3.3 : पद्माकर

धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त मैं चढ़ै नहीं।
कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

बोध प्रश्न 3.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पद्माकर की गोपी किसे धो-धोकर हार गई-
   (क) दर्द को (ख) चित्त को
   (ग) कृष्ण की छवि को (घ) कृष्ण को
2. 'वीर!' संबोधन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है-
   (क) कृष्ण (ख) सखी
   (ग) चित्त (घ) पद्माकर

3.5 आइए समझें

प्रसंग : प्रस्तुत कवित्त में पद्माकर ने फाग (होली) का बड़ा हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किया है। एक गोपिका कृष्ण के साथ गुलाल से फाग खेलने का बड़ा सजीव वर्णन अपनी प्रिय सखी से करती है।

व्याख्या : उत्साह-उमंग का त्योहार वसंत से जुड़ा है जिसे आप भी खूब जानते हैं। उसे कहते हैं होली। इसी का दूसरा नाम है-फाग। वैसे फाग उन लोकगीतों को भी कहते हैं, जो होली में गाए जाते हैं। आइए देखें पद्माकर फाग का चित्रण किस प्रकार कर रहे हैं। पहले संपूर्ण कवित्त को एक-दो बार पढ़कर स्वयं समझने का प्रयास कीजिए।

चित्र 3.4 : होली का दृश्य गोपियाँ (आँखों में अबीर चला जाता है।)

टिप्पणी

शब्दार्थ

धाए	–	दौड़े
दोऊ	–	दोनों
दृगनि	–	आँखों में
जु	–	जो
मढ़ै नहीं	–	अपनी जगह से हटता नहीं,
तिहारी	–	तुम्हारी,
सौंह	–	कसम
कासे	–	किससे
निकासो	–	निकालो
कोऊ	–	कोई
जासै	–	जिससे
एरी	–	अरी
बीर	–	बहन जैसी सखी
कढ़िगो	–	निकल गया
पै	–	परंतु
कढ़ै नहीं	–	निकलता नहीं

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।

धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त मैं चढ़ै नहीं।

कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै, कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।

एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

कवि की कल्पना को कुछ गहराई से समझें। पूरा कवित्त एक गोपिका का कथन है। उसकी परेशानी क्या है? इसे समझने के लिए होली के एक रिवाज़ को याद कीजिए– अबीर-गुलाल हवा में उड़ाना-उछालना। यह उड़ता गुलाल गोपिका की आँख में ही चला गया है। उसके साथ नंदलाल भी आँख में बस गए हैं। सोचिए समस्या क्या है? केवल गुलाल आँखों में पड़ जाए तो उसे निकालने का क्या उपाय हो सकता था? गोपी आँखें धो-धोकर हार गई है, उसे सफलता नहीं मिल पा रही-ऐसा क्यों? उसे क्या छटपटाहट है? कासे कहूँ? कौन सुने? में क्या व्यथा छिपी है? क्या गोपी की बात विश्वसनीय लगती है?

नंदलाल के आँखों में बस जाने का दर्द दूर करने के लिए वह क्या नहीं समझा पा रही है? अबीर तो जैसे-तैसे निकल गया, पर अहीर नहीं। पर अहीर कौन है? कल्पना कीजिए। क्या गोपी सचमुच श्रीकृष्ण को आँखों से दूर करना चाहती है?

पूरी कविता में कवि की व्यंजना पर ध्यान दीजिए। यहाँ कृष्ण के प्रति उमड़े प्रेम को आँखों में अबीर पड़ने की स्थिति से वर्णित किया है, पर जितनी सरलता से अबीर धुल जाता है उतनी सरलता से कृष्ण-प्रेम नहीं धुल सकता। न गोपी ऐसा चाहती ही है, वह तो अपनी सहेली की सौगंध खाकर उसे आश्वासन दिलाना चाहती है कि वह कृष्ण को निकाल नहीं पा रही है और न उसे इसका कोई उपाय सूझ रहा है।

आप स्वयं इसकी विस्तार से व्याख्या अपने अनुभवों के आधार पर अलग कागज़ पर लिखिए।

कवित्त से अनुप्रास, यमक अलंकार के उदाहरण छाँटिए। उन पंक्तियों को चुनिए जिसमें गोपिका की अधीरता, अकुलाहट और विवशता चित्रित हुई है। इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि इसमें किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न 3.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. गोपिका की ओर एक-साथ कौन-कौन दौड़े-

   (क) ग्वाल-बाल और गुलाल　　(ख) नंदलाल और ग्वाल-बाल

   (ग) गुलाल और नंदलाल　　(घ) अहीर युवक और अबीर

2. कौन-से दो शब्द पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं-

   (क) 'नंदलाल' और 'अहीर'　　(ग) 'नंदलाल' और 'बीर'

   (ख) 'अहीर' और 'अबीर'　　(घ) 'अहीर' और 'बीर'

3. 'तिहारी सौंह' कहकर गोपिका प्रकट करना चाहती है-

   (क) व्यंग्य　　(ख) क्रोध

   (ग) सरलता　　(घ) विश्वसनीयता

3.6 भाव और शिल्प-सौंदर्य

आपने पद्माकर के एक छंद का अध्ययन किया। इस छंद में फाग के अवसर पर प्रेम के प्रभाव की मार्मिकता का सुंदर चित्रण है।

कवि पद्माकर रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रतिभा संपन्न कवि थे। उनमें शृंगार रस की अभिव्यक्ति की अद्भुत प्रतिभा रही है। इसी कारण कवि पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं।

पद्माकर के काव्य में लाक्षणिकता और मधुरता भी अभिव्यक्त हुई है। वे अनुप्रासों की तो झड़ी ही लगा देते हैं, जिससे अद्भुत चमत्कार पैदा हो जाता है।

पद्माकर रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि हैं। रस निरूपक आचार्य कवि के रूप में उन्हें बहुत ख्याति मिली। सजीव मूर्तविधान करने वाली कल्पना द्वारा उन्होंने प्रेम और सौंदर्य के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए हैं। वे उत्कृष्ट प्रतिभासंपन्न कवि हैं।

पद्माकर के काव्य की सर्वोपरि विशेषता है- दृश्य और शब्द-योजना के द्वारा प्रकृति का चित्रण करते हुए ऋतु-वर्णन और कल्पना की उल्लासमयी उड़ान। आनंद और उल्लास में जगमगाते चित्र प्रस्तुत करने में उनकी शब्द-संयोजना अनुपम है।

आइए, अब दोनों कवियों बिहारी और पद्माकर की विशेषताओं को इस प्रकार आत्मसात करें-

3.7 आपने क्या सीखा

1. बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने शृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति-चित्रण से संबंधित सुंदर दोहों की रचना की है।
2. शृंगार का चित्रण करते समय बिहारी ने नायक-नायिका की दैनिक गतिविधियों को चुना है।
3. बिहारी के भक्तिपरक दोहे भक्तिकालीन काव्य से अलग हटकर हैं। उन्होंने सख्य-भाव से, अंतरंगता के साथ कृष्ण का स्मरण किया है।
4. बिहारी ने प्रकृति के कोमल और रुचिकर रूपों के साथ-साथ उसके प्रचंड रूपों का भी सुंदर वर्णन किया है।
5. बिहारी के काव्य में तत्सम शब्दों से लेकर ठेठ ग्रामीण शब्दों तक का प्रयोग हुआ है। लोक में प्रचलित मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग करने में बिहारी दक्ष हैं।
6. बिहारी के दोहों में अनेक अर्थों तथा अर्थ-छवियों की संभावना रहती है, जिसके कारण उन्हें 'गागर में सागर' भरने वाला कवि कहा जाता है।
7. आलंकारिकता बिहारी की भाषा की प्रमुख विशेषता है। उन्होंने अपने काव्य में अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है।

8. बिहारी ने अपनी रचनाओं में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है, अर्थात् उनके सामान्य से दीखने वाले शब्द-प्रयोग और उक्तियाँ अपने में विशिष्ट अर्थ-संकेतों को व्यक्त करने का सामर्थ्य रखती हैं।

9. पद्माकर रीतिकाल के अंतिम समर्थ कवि हैं और उनके काव्य मेंशृंगार के साथ ही ऋतुओं तथा त्योहारों का उल्लास व्यक्त हुआ है।

10. पद्माकर की भाषा में रीतिकालीन काव्य-भाषा और शिल्प की समस्त सरसता, सुगढ़ता, कोमलता और आलंकारिकता मिलती है। ब्रजभाषा का प्रौढ़ साहित्यिक रूप पद्माकर के काव्य में बड़े स्वाभाविक रूप में विद्यमान है।

11. उनके रूपचित्र भी रंगीन और आकर्षण हैं। फाग के जो नयनाभिराम, सहृदयता भरे दृश्य-चित्र कवि ने अंकित किए हैं, उनमें भाव-प्रवणता और दृश्यविधायिनी-क्षमता का पूरा परिचय मिलता है।

3.8 चित्रात्मक प्रस्तुति

रीतिकाल

बिहारी	**पद्माकर**
भावगत विशेषताएँ	**भावगत विशेषताएँ**
भक्ति में अंतरंगता	ऋतु एवं त्योहार के माध्यम से प्रेम-शृंगार
नीति के माध्यम से बुराइयों से उबरना	प्रेम में विवशता
शृंगार का संयोग पक्ष	**शिल्पगत विशेषताएँ**
प्रकृति का प्रचंड रूप	ब्रजभाषा
शिल्पगत विशेषताएँ	कवित्त छंद
गागर में सागर	अनुप्रास अलंकार
ब्रजभाषा	लाक्षणिकता
दोहा छंद	
अनुप्रास एवं यमक अलंकार	
लाक्षणिकता	
मुहावरों का प्रयोग	

3.9 सीखने के प्रतिफल

(i) भक्ति, नीति, शृंगार और प्रकृति-चित्रण की प्रवृत्तियों को समझते हैं और उनके विषय में अपने मित्रों से चर्चा करते हुए वर्णन करते हैं।

(ii) भाषा के नए रूपों; जैसे- अलंकार एवं लक्षणा शब्द शक्ति का उपयोग करना सीखते हैं और अपने लेखन में प्रयोग करते हैं।

3.10 योग्यता विस्तार

बिहारीलाल

कविवर बिहारीलाल रीतिकाल के सुप्रसिद्ध और चर्चित कवि हैं। उनकी विशेषता रही है कि वे शृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति संबंधी गहरी बातों से लेकर लोक-व्यवहार संबंधी ज्ञान रखते हैं। कवि बिहारी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की है, जिसमें लगभग सात सौ दोहे हैं। इसका प्रथम दोहा है : *'मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोई'। यह* दोहा उन्होंने मंगलाचरण के रूप में लिखा है। बिहारी राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे, अत: उन्होंने इसमें राधा को अधिक महत्त्व दिया है और उनसे सांसारिक बाधाओं के निवारण की प्रार्थना करते हुए अपनी काव्य-रचना को निर्विघ्न समाप्त कर पाने के वरदान का निवेदन किया है।

पद्माकर

महाकवि **पद्माकर** रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनका जन्म संवत् 1810 में जिला बाँदा में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रतिभा के कारण अनेक राजदरबारों में प्रतिष्ठा प्राप्त की। पद्माकर ने बाँदा के हिम्मत बहादुर सिंह के दरबार में रहकर 'हिम्मत बहादुर विरुदावलि' की रचना की। सतारा नरेश रघुनाथ राव, जयपुर नरेश सवाई जयसिंह और राज प्रताप सिंह तथा ग्वालियर नरेश दौलतराव सिंधिया के दरबार में आपने सम्मानपूर्वक आश्रय प्राप्त किया।

पद्माकर की प्रमुख रचनाएँ हैं- 'हिम्मत बहादुर विरुदावलि', 'जगतविनोद', 'पद्माभरण', 'रामरसायन' 'गंगालहरी' आदि।

माना जाता है कि कवि पद्माकर जीवन के अंतिम समय में कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गए थे और गंगातट पर गंगाजल का निरंतर सेवन करने के उपरांत वे स्वस्थ होते चले गए। अत: उन्होंने गंगा की स्तुति में 'गंगालहरी' नामक ग्रंथ की रचना की। अंतत: उन्होंने कानपुर में गंगातट पर ही निवास-स्थान बना लिया और 80 वर्ष की आयु में उनका देहांत हुआ।

3.11 पाठांत प्रश्न

1. कवि ने क्यों कहा है कि ईश्वर को दुनिया की हवा लग गई है?

2. 'मादक पदार्थों से सौ गुना नशा धन का होता है'- उदाहरण देकर कथन की पुष्टि कीजिए।

3. निम्नलिखित दोहे की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।

जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।

4. पद्माकर के कवित्त में गोपी अपनी किस विवशता का वर्णन कर रही है?

5. पद्माकर के कवित्त में 'अहीर' और 'अबीर' की तुलना किस प्रकार की गई है?

6. बिहारी के पठित दोहों के भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी लिखिए।

7. पठित दोहों के आधार पर बिहारी की भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

8. पद्माकर के कवित्त के भाव-सौंदर्य का उल्लेख कीजिए।

9. पद्माकर के कवित्त की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।

3.12 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न 3.1

1. (क), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. (ख) 2. (ग), 3. (क), 4. (क)

3.2 1. (क) 2. (क), 3. (घ)

3.3 1. (ग) 2. (क), 3. (घ)

बोध-प्रश्न 3.2

1. (ग) 2. (ख)